



ISSN: 3049-2017  
IJMH 2026; 3(2): 120-124  
© 2026 IJMH  
www.themultijournal.com

Received: 23-03-2026  
Accepted: 01-04-2026  
Publish : 02-04-2026

**Mallika Biswas**  
Former Student,  
Dept. of Sanskrit,  
Jadavpur University,  
West Bengal, India

## काव्य सृष्टि में प्रतिभा : एक टि सतीकालक आलोकन

**Mallika Biswas**

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.19413907>

### सारसंकेत

भारतीय अलङ्कारशास्त्रे इतिहासे काव्ये कारण हिसावे विविध मतमत थालेओ सर्वजनस्वीकृतभावे प्रतिभाकेइ कविशक्ति मूले स्थान देओया हयेओ. सेटा शुधुमात्र शब्द, अर्थ, गुण ओ अलङ्कारे निर्वाचन नया यार एक ओ अन्यातम उद्देश्य हल रसोपलब्धि. काव्य-पाठ आनन्ददायक तखनइ हवे, यखन तार रसश्रोत पाठकेर अन्तरे प्रवाहित हवे। एकजन कवि तार काव्ये सृष्टिकर्ता हिसावे प्रतिभा उपरेइ भर करे एमन काव्य रचना करते समर्थ हन। सेखाने प्रतिभाके सङ्ग दिते थाले व्यापत्ति (शास्त्र ज्ञान) ओ अभ्यास (निरन्तर काव्य रचनाय प्रयास)।

आलोच्य विषय हिसावे भामह ओ दण्डी शब्दार्थे भित्तिते प्रतिभाके चिह्नित करेओ. वामनेर मते प्रतिभाइ कवित्वे मूले, राजशेखरेर दुई धरनेर काव्यप्रतिभा कविसह समालोचकदेरओ गुरुत्व बुझयेओ। सर्वोपरि जगन्नाथे मूलिकत्व हल प्रतिभा सृष्टि कारण तिनि निर्देश करेओ. तिनि प्रतिभाके शुधुमात्र अदृष्टजनित विषय हिसावे देखेननि। प्राचीनालङ्कारिकेरा येखाने प्रतिभाके एतटा गुरुत्व दियेओ. सेखाने वर्तमान समाज सहजात एइ गुणटिके प्राय हरियेइ फेलेओ बला चले। आगामी दिने एइ प्रजन्म थेके नतून काव्य सङ्कारे जन्य प्रतिभाओ गुरुत्व परिस्फुट करा अवश्य प्रयोजन।

**Key Words** — काव्यप्रतिभा, काव्यकारणाश्लेषन, दण्डी, राजशेखर, प्रतिभाओ द्विविधत्व, काव्यसृजने प्रतिभा।

### भूमिका

काव्ये सृष्टि थेके श्रेणिविभाग पर्यन्त पण्डित-आलङ्कारिकदेर आलोचनाओ शेष नेइ। काव्ये शरीर, आत्मा, कारण ओ प्रयोजन नये आलङ्कारिकगण निजसह मतमत लिपिबद्ध करे गियेओ. काव्यपाठ येमन पाठकेर परम्पराय आश्रित तेमनइ तार कारण, श्रुति प्रसङ्गेओ अनुसङ्गिसार अन्त नेइ। काव्य सृष्टि उद्देश्यइ हल पाठक चित्ते आनन्दरस सृजन करा। तइ नाना आलङ्कारिके नाना मते शब्दार्थ सहित, इष्टार्थयुक्त, दोषविहीन किन्तु गुणयुक्त आवार कखनो अलङ्कार शून्य, रसायक वाक्य या रमणीयार्थे प्रतिपादक हवे तइ काव्य। तवे एइ वैशिष्ट्यगुणिले प्रभूत मतविरोध थाला सत्तेओ काव्य सृष्टि पश्चाते ये निर्दिष्ट कारण रयेओ, ता अस्वीकार करार उपाय नेइ।

काव्यपाठे प्रयोजन येमन— **“विगलितवेद्यान्तरम् आनन्दम्”**<sup>1</sup> तेमनइ तार अन्तरे रयेओ कवित्व शक्ति। एकजन कविइ पारेन तार पाठके परमानन्दे दारगोडाय नये येते। तइ काव्यके ब्रह्मसहोदर आनन्द बला हय। काव्ये सृष्टिकर्ता कविइ, तार रचना विश्वब्रह्माण्डे सकल नियम थेके विच्युत। ‘कवि’ शब्दटि वेदे क्रांतिदर्शी देवता एवम् मन्त्रद्रष्टा ऋषिदेर बोवाते व्यवहृत हत। अतएव कवि हवेन त्रिकालदर्शी, यार दृष्टिते भूत, भविष्य ओ वर्तमान तिनकालइ धरा देवे। मन्त्रद्रष्टा ऋषिरा शुधुइ दर्शन करेन, किन्तु कवि दर्शन करेन एवम् सृजनशील क्षमताय सृष्टि करे तार प्रकाश करेन। काव्यप्रकाशकार मन्त्रटि बलेओ—

**“नियतिकृतनियमरहितां हलादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।**

**नवरसहचिरां निर्मितमादधती भारती कवेर्जयति।”**<sup>2</sup>

अर्थात्, नियतिर नियम यार ओपर कार्यकरी नय, या साक्षात् आनन्दे स्वरूप एवम् ये रचना अन्ये अधीन नय वरम् स्वधीन ओ स्वतन्त्र। नयटि रस द्वारा सुसङ्गित। एइ महाविश्वे कोनो नियमइ कवि रचनाय प्रभाव विस्तार करते पारे ना। आमामे दैनन्दिन जीवन सुख-दुःख मिश्रित, प्रकृतिते रोद, जल, बहि समस्त किछुइ विद्यामान। किन्तु कवि सृष्टिते तेमन दुःखे लेशमात्र नेइ। कवि मध्ये ये सृजन क्षमता रयेओ ता दिये तिनि नायिकार मुखे प्रस्फुटित पद्मे परिणत करते पारेन। तार सृष्टिते निरलस सुखइ विराजमान। तइ अग्निपुराणे बला हयेओ—

**“अपावे काव्यसंसावे कविरिकः प्रजापतिः।**

**यथास्मै रोचते विश्वं तथैव परिवर्त्तते।”**

**Correspondence:**  
**Mallika Biswas**  
Former Student,  
Dept. of Sanskrit,  
Jadavpur University,  
West Bengal, India

কবির এই সৃষ্টি ক্ষমতা নির্ভর করে তাঁর পাণ্ডিত্যের ওপর। একটি সুকাব্য রচিত হতে কতগুলি কারণ বিদ্যমান। আলংকারিকদের একটি অংশ বলেন প্রতিভা, শাস্ত্রে নিপুণতা ও অভ্যাস হল কাব্যের কারণ। অপর দল বলেন, কাব্যসৃষ্টির কারণ শুধুই প্রতিভা।

প্রতিভা হল একপ্রকার বিশিষ্ট জ্ঞান, যাকে ভট্টতৌত প্রজ্ঞাও বলেছেন— “**প্রনা নবনবোন্মেষথালিনী প্রতিভা মত্যা**”<sup>3</sup> অর্থাৎ কোনো বিষয় সম্পর্কে অভিনবত্বের সাথে সৃজনশীলতার জ্ঞান। মন্সট এই প্রতিভাকে শক্তি বলেছেন। অভিনবগুণের মতে “**শক্তি: প্রতিভানং বর্ণনীযবস্তুবিষয়নূতনোল্লে-খশা-লিত্বম্**”<sup>4</sup>। রাজশেখরের মতে দ্বিবিধ প্রতিভাই কবির মধ্যে বিদ্যমান। কারয়িত্রী প্রতিভা কবির মধ্যে এবং ভাবয়িত্রী সমালোচকদের মধ্যে। কবি নিজ হৃদয়ে যা অনুভব করেন ভাষার আশ্রয়ে তা কাব্যরূপে প্রকাশ পায়। আর সেই রমণীয় অর্থ পাঠকের হৃদয়দর্পণে উদ্ভাসিত হয়, যা থেকে সে নিজস্ব জগৎ সৃষ্টি করে। অতএব কাব্যসৃষ্টিতে প্রতিভার ভূমিকা অনস্বীকার্য।

কাব্যের কারণ প্রসঙ্গে প্রতিভা, ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস সকল পাঠকের জন্য আবশ্যিক। প্রতিভার ভিত্তিতেই একজন কবি তাঁর কাব্যজীবনে প্রসিদ্ধি লাভ করেন। প্রতিভাকে অবলম্বন করেই পাঠক তার অভিপ্রেত অর্থ পর্যন্ত পৌঁছাতে সক্ষম হয়। সুতরাং কাব্যরচনায় প্রতিভার গুরুত্ব অনেকখানি। অতএব আমি আলোচ্য সমীক্ষায় প্রতিভা বিষয়ে একটি স্বচ্ছ দৃষ্টিকোণ উপস্থাপন করতে সচেষ্ট হবো।

#### উদ্দেশ্য —

কাব্য রচনা করা বা সেই বিষয়ের অন্তর্নিহিত অর্থ বোঝা সকলের পক্ষে সম্ভব নয়। একজন সুকবির কাব্য তার পাঠককে ঠিক খুঁজে নেয়। তেমনি পাঠকের মনের হৃদয় পেতে কবিকেও সবটুকু উজাড় করে দিতে হয়। উদ্ধৃত আলোচনায় আমি কাব্যের প্রকৃত কারণ, প্রতিভা সম্পর্কে সঠিক ধারণা, বিভিন্ন আলংকারিকদের প্রতিভা বিষয়ে মতামত উপস্থাপন করবো। সর্বোপরি কাব্যসৃষ্টিতে প্রতিভার ভূমিকা যে গুরুত্বপূর্ণ এবং সেটা শুধু প্রাচীনালংকারিকগণের বক্তব্য নয়, বর্তমান দিনেও কাব্য রচনায় ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাসের সঙ্গে প্রতিভাও সমানভাবে প্রয়োজন। একজন কবির সাথে সাথে পাঠকেরও সেই ক্ষমতা থাকা প্রয়োজন যা তাকে ব্রহ্মসহোদর আনন্দের নিকট পৌঁছে দেবে। বর্তমান দিনে ব্যস্তজীবনে প্রতিভার গুরুত্ব সকল পাঠককে স্মরণ করানোই আমার সর্বোপরি প্রচেষ্টা।

#### বিষয়ের পর্যালোচনা

কাব্য কোনো একক মুহূর্তে রচনা হওয়ার বিষয় নয়। কবির নিরলস পরিশ্রমে একটি ভালোমানের কাব্য রচিত হয়। সেই কাব্যের প্রয়োজন যেমন যশ, অর্থ, ও আনন্দপ্রাপ্তি তার শরীর গঠনে যেমন শব্দার্থের প্রয়োজন তেমনি সেই কাব্য সৃষ্টির পশ্চাতে বিশেষ কারণও বিদ্যমান। আমরা জানি কারণ ছাড়া কার্যোৎপত্তি হয় না, আর কাব্য তো নয়ই। একজন কবি পরিচিতি লাভ করে তাঁর রচনায়। একটি কাব্য শুধু নামেই নয়, সেটি সমাজের দর্পণ রূপে প্রতিফলিত হয়। অতএব কাব্য নির্মাণের কারণও বর্তমান। প্রাচীনালংকারিক ভামহ, দণ্ডী, বামন, আনন্দবর্ধন, মন্সট, জগন্নাথ, রাজশেখর, অভিনবগুপ্ত ও তাঁর গুরু ভট্টতৌত কাব্য রচনায় প্রতিভার গুরুত্ব স্বীকার করেছেন। তবে বেশকিছু আলংকারিক প্রতিভাসহ ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাসকেও কাব্য সৃষ্টির হেতু মেনেছেন।

আমি ‘কাব্যাদর্শ’, ‘কাব্যালংকারসূত্রবৃত্তি’, ‘ধ্বন্যালোক’, ‘কাব্যপ্রকাশ’, ‘কাব্যমীমাংসা’, ‘রসগঙ্গাধর’ ইত্যাদি গ্রন্থাবলীর সাহায্যে প্রতিভার স্বরূপ ও কাব্যে তার অনুদান সম্পর্কে ব্যক্ত করব।

#### মূল আলোচনা —

#### কাব্যসৃজনে প্রতিভার ধারণা—

কাব্য সৃষ্টির পশ্চাতে অনেকটা বড়ো অংশ নিয়ে রয়েছে প্রতিভা। প্রতিভা সম্পর্কে বলা হয়, “**অপূর্ববস্তুনির্মাণক্ষমা প্রনা**”<sup>5</sup>। প্রতিভা সহজাত গুণ। ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস কাব্যের গুণমানের উৎকর্ষতা বৃদ্ধি করে ঠিকই কিন্তু প্রতিভা ব্যতিরেকে কবির সৃজনক্ষমতা স্বার্থকতার শিখরে পৌঁছাতে পারে না। প্রতিভার অর্থই হল সৃষ্টি করার ক্ষমতা। কবি নিজ কল্পনা শক্তিতে যে অর্থের সন্ধান পান, সেই অর্থানুযায়ী শব্দ চয়ন করে একটি ভালোমানের কাব্য রচনা করেন। ভামহের মতে — “**শব্দার্থী সহিতী কাব্যম্**”<sup>6</sup> অর্থাৎ, শব্দ ও অর্থের সহভাবই হল কাব্য। কিন্তু সেই কাঙ্ক্ষিত শব্দ ও অর্থ কেমন হবে, তাদের সম্পর্ক কেমন হবে, অবস্থান কোথায় হবে তার নির্দেশনা চলে কবিমস্তিস্কে। কবি সেই শব্দার্থের সঙ্গে নিজের ভাবমাধুর্য্য, গুণালংকার মিশ্রিত করে তাঁর কবিকর্ম সম্পন্ন করেন। সহজাত প্রতিভা ব্যতীত এই নিপুণ কৌশলের যথাযথ প্রয়োগ হয় না। কবির প্রতিভা সম্পর্কে ধ্বনিকার আনন্দবর্ধন বলেন -

#### “সরস্বতী স্বাদু তদর্থবস্তু

নি:অনন্দমানা মহতা কবীনাম্।

আলোকসামান্যমভিব্যনক্তি

পরিষ্করন্তং প্রতিভাবিশেষম্।”<sup>7</sup>

অর্থাৎ, মহাকবিগণের বাণী সেই সুমধুর অর্থবস্তু ক্ষরিত করে, তাঁদের আলোকসামান্য প্রতিভা-বৈশিষ্ট্য ভাস্বরভাবে প্রকাশ করেন। তিনি আরো বলেন, মহাকবিদের বাণী স্বাক্ষাৎ সরস্বতী, যা সহজভাবেই ক্ষরিত হয়। তাঁর প্রতিভাবিশিষ্ট উজ্জ্বল বাণী তাঁকে কাব্যজগতে প্রসিদ্ধি এনে দেয়। ধ্বনিকার বলেন — “**ক্লাব্ব-দ্বন্দ্ব বিয়োগাথ্য: শোক: শ্লোকল্লেখমাগত:।**”<sup>8</sup> অর্থাৎ, নিহত সহচরীর বিরহে কাতর ক্রোড়ের ক্রন্দনজাত শোকই শ্লোকরূপে পরিণত হয়েছিল। উপরিউক্ত শ্লোকে আদিকবি বাণীকির কথা বলা হয়েছে। তাঁর সম্মুখে ক্রোড়ের সহচরীর বিয়োগজনিত শোক থেকেই তাঁর মুখে শ্লোকবাক্যের সৃষ্টি হয়েছিল। সহজাত প্রতিভা ব্যতীত শুধুমাত্র অভ্যাস ও শাস্ত্রজ্ঞান দ্বারা তা প্রায় অসম্ভব। তাই ধ্বনিকার বলেন—

#### “কাব্যস্যাৎমা স এবার্থস্তথাচারিকবে: পুরা।”<sup>9</sup>

আলংকারিকদের মতে প্রতিভা -

#### ভামহের মতে প্রতিভা -

ভারতীয় অলংকারশাস্ত্রের ইতিহাসে রসপ্রণেতা ভরতের পর অলংকারবাদী ভামহের অবস্থান। ভামহের কাব্য মূলত শরীরবাদী। তিনিও ‘কাব্যালংকার’ গ্রন্থে কাব্যের লক্ষণ, প্রয়োজন, অলংকার, কাব্যের শ্রেণীবিভাগ ইত্যাদি বিষয়ে আলোচনা করেছেন। কাব্যের কারণ হিসেবে তিনি মূলত প্রতিভা, ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস এই তিনটিকেই মেনেছেন। তিনি বলেন—

#### “কাব্যং তু জায়তে জাতু কস্যচিৎ প্রতিভাবত:।

শব্দাভিধেয় বিজ্ঞায় কৃত্বা তদ্বিদুদামনম্।

বিলোক্যান্যনিবন্ধাশ্চ কার্য: কাব্যক্রিয়াবদ:।”<sup>10</sup>

আচার্য্য ভামহের মতে, কাব্য কেবল সেই রচনা করতে পারেন যার মধ্যে জন্মগত প্রতিভা আছে। কবি নিজের কাব্যে প্রজাপতির ন্যায় বিচরণ করেন। সুকবিত্বের গর্ভে রয়েছে বীজস্বরূপ প্রতিভা।

#### দণ্ডীর মতে প্রতিভা—

অলংকার সম্প্রদায়ে ভামহের পর দণ্ডীর স্থান। তবে তাঁদের সময়কাল নিয়ে মতবিরোধ আছে। দণ্ডীর নামে মোট তিনটি গ্রন্থ পাওয়া যায়। তাদের মধ্যে অলংকার শাস্ত্রের গ্রন্থ ‘কাব্যাদর্শ’-এ তাঁর জ্ঞান ও পাণ্ডিত্যের সুপ্রয়োগ তিনি করেছেন। একটি কাব্য কবির গুণাবলীর উপরেই দণ্ডায়মান। দণ্ডী বলেন, ইষ্ট

অর্থাৎ অভিপ্রেত বা আকাঙ্ক্ষিত অর্থযুক্ত পদাবলী বা বাক্যই কাব্য শরীরের নির্মাণ, "শারীরং তাবদিষ্টার্থব্যবচ্ছিন্না পদাবলী"।<sup>11</sup> ইষ্ট অর্থ বলতে লোকান্তর চমৎকারযুক্ত কোনো অর্থকে বোঝায় যা পাঠক বা সহৃদয়ের অভিপ্রেত। লোকান্তর চমৎকারের কারণ ইহলৌকিক কোনো ঘটনা নয় বরং তা হবে সর্বকালীন, সর্বদেশিক এবং সর্বজনগ্রাহ্য। যে অর্থ সকল পাঠকের চিত্ত আন্দোলিত করতে সক্ষম। আর এই চমৎকারিত্ব আসে কবির কল্পনায়। তাঁর রচনার গুণ, অলংকার, সৌন্দর্য্য পাঠককে আকর্ষিত করে। পাঠককুলকে আনন্দধারায় অবগাহন করায়। কাব্যের কারণ বা কবির গুণ সম্পর্কে দণ্ডী বলেন,

**"নৈসর্গিকী চ প্রতিভা শ্রুতং চ বহুনির্মলম্।**

**অমন্দশ্রাম্ভিয়োগোঃস্যাঃ কারণং কাব্যসম্পদঃ।"**<sup>12</sup>

অর্থাৎ, জন্মগত প্রতিভা, নিঃশ্রুত শাস্ত্রজ্ঞান এবং পুনঃ পুনঃ অভ্যাস বা চেষ্টাই কাব্যের কারণ। এই তিনটিকে একত্রে তিনি কাব্যকারণ স্বীকার করেছেন। তিনি পরবর্তী শ্লোকে আরও বলেন,

**"ন বিদ্যতে যদ্যপি পূর্ববাসনা গুণানুবন্ধি প্রতিভানমদ্ভুতম্।**

**শ্রুতেন যত্নে চ বাগুপাসিতা ধ্বং করোত্যেব কমপ্যনুগ্রহম্।"**<sup>13</sup>

যদি কোনো ব্যক্তির সহজাত প্রতিভা নাও থাকে, তাহলে তিনি নিত্য প্রযত্ন ও শাস্ত্রজ্ঞান দ্বারা বাগদেবীর উপাসনাপূর্বক তাঁর অনুগ্রহ পাবেন। অর্থাৎ, কবি হতে পারবেন। দণ্ডীর এই কথায় কাব্য রচনায় নিরন্তর প্রয়াসী ব্যক্তিদের মনে আশার দ্বীপ জ্বলবে। অতএব, যারা বিদ্বৎ সমাজে প্রসিদ্ধি অর্জনে ইচ্ছুক তারা গ্রন্থকারের বাক্যানুযায়ী দিবারাত্র কঠোর পরিশ্রম করে শাস্ত্রে যত্নপূর্বক সরস্বতীর উপাসনায় আত্ম নিয়োজিত হবেন। তবেই ব্যক্তি কাঙ্ক্ষিত ফল লাভ করতে সক্ষম হবেন। কবিসমাজে প্রসিদ্ধি লাভ করবেন -

**"তদস্ততন্দ্রৈরনিশাং সরস্বতী শ্রমাৎ (ক্রমাৎ) উপাস্যা স্তু কীর্ত্তিমীপ্শুभिঃ।**

**কৃশে কবিত্বৈত্য়পি জনাঃ কৃতশ্রমাঃ বিদগ্ধগোষ্ঠীষু বিহত্তুমীশাতে।"**<sup>14</sup>

**বামনাচার্যের মতে কাব্যের হেতু—**

আচার্য বামনকে অলংকারশাস্ত্রের ইতিহাসে রীতিপ্রস্থানের জনক ধরা হয়। কাশ্মীরীয় আলংকারিক বামন অলংকার প্রসঙ্গে বলেন, "সৌন্দর্যমলংকারঃ"<sup>15</sup>, সৌন্দর্যই হল অলংকার। তাঁর মতে, "কবিত্ববীজং প্রতিভানম্"<sup>16</sup> অর্থাৎ, প্রতিভাই হল কবিত্বের বীজস্বরূপ। তিনি আরো বলেছেন, "কবিত্বস্য বীজং কবিত্ববীজম্। জন্মান্তরাগতসংস্কারবিশেষঃ কস্মিন্। যস্মাদ্বিনা কাব্যং ন নিষ্পন্নত, নিষ্পন্নং বা হাস্যাতং স্যাৎ।"<sup>17</sup> অর্থাৎ, কবিত্বের মূল বীজই হল কবিত্ববীজ। যা পূর্বজন্মের কোনো সংস্কারবিশেষ, তা ব্যতীত কাব্য নিষ্পন্ন হয় না, হলেও সেটি হাসির পাত্র হয়। তাঁর মতে প্রতিভা ছাড়াও কাব্য রচনার তিনটি উপাদান হল— "লোকো বিদ্যা প্রকীর্ত্তনং কাব্যাজ্জানি।"<sup>18</sup> অর্থাৎ, লোক, বিদ্যা ও প্রকীর্ত্তন।

**রাজশেখরের মতে প্রতিভার দ্বিবিধত্ব -**

কাব্যমীমাংসা গ্রন্থের রচনাকার রাজশেখরের সময়কাল নিয়ে নানা মত থাকলেও ধরে নেওয়া যায় তিনি দশম শতকের প্রথম পাদে আবির্ভূত হয়েছিলেন। অলংকারশাস্ত্রে তাঁর অবদান গুরুত্বপূর্ণ। তিনিই প্রথম আলংকারিক যিনি কাব্য এবং অলংকার বোঝাতে 'সাহিত্য' পদের ব্যবহার করেছেন, "শব্দার্থযৌথ্যাবৎ সহম্বাভে ন বিদ্যা সাহিত্যবিদ্যা।"<sup>19</sup> এখানেই তাঁর অভিনবত্ব।

কাব্যের কারণ প্রসঙ্গে গ্রন্থকার "কাব্যমীমাংসা" গ্রন্থের 'পদবাক্যবিবেকঃ' নামক চতুর্থ অধ্যায়ে বলেছেন। রাজশেখর মূলত সরাসরি প্রতিভাকে কাব্যের কারণ বলেন নি। তিনি শক্তিকে প্রাধান্য দিয়েছিলেন। তাঁর মতে—

**"সমাধিরান্তরঃ প্রয়ত্তো বাহ্যস্বভায়াসঃ। তাবুভাবপি শক্তিমুদ্ভাসয়তঃ। সা কেবলং কাব্যে হেতুঃ ইতি যাত্যাবরীয়ঃ।"**<sup>20</sup>

অর্থাৎ, সমাধি ও অভ্যাস হল আভ্যন্তর এবং বাহ্যপ্রযত্ন, তারা শক্তিকে উদ্ভাসিত করে। এই শক্তিই একমাত্র কাব্যরচনার হেতু। শক্তিই হল প্রতিভা ও ব্যুৎপত্তির উৎসস্থল, "শক্তিকবুঁকি হি প্রতিভাব্যুৎপত্তিকর্মণী"<sup>21</sup>। প্রতিভা সম্পর্কে রাজশেখরের বক্তব্য, "যা শব্দগ্যামমর্থসার্থমলঙ্কারতন্ত্রমুক্তিমার্গমন্যদপি তথাবিধমধিহৃদয়ং প্রতিভাসয়তি সা প্রতিভা।"<sup>22</sup>

অর্থাৎ, প্রতিভা হল এমন এক অপূর্ব বস্তু যার দ্বারা শব্দ ও অর্থসমূহ, অলংকার, বাগবিন্যাস এবং তদনুরূপ বিষয় ইত্যাদি অন্তরে প্রতিভাসিত হয়। কবি রাজশেখরের মতে যারা প্রতিভাবান ব্যক্তি তাদের দৃষ্টিতে অদেখা বিষয়ও প্রত্যক্ষ মনে হয়, কিন্তু যে ব্যক্তি প্রতিভাহীন তাঁর কাছে বিষয়বস্তু পরোক্ষ মনে হয়, "অপ্রতিভস্য পদার্থসার্থঃ পরোক্ষ ইব। প্রতিভাবতঃ পুনরপথযন্তোঃপি প্রত্যক্ষ ইব।"<sup>23</sup> উদাহরণস্বরূপ আলংকারিক রাজশেখর বলেন, মেধাবিরুদ্ধ ও কুমারদাস প্রভৃতির জন্মগত অন্ধ হওয়া সত্ত্বেও কবি হয়েছিলেন।

রাজশেখর কবিপ্রতিভাকে দুইভাগে ভাগ করেছেন— কারয়িত্রী ও ভাবয়িত্রী প্রতিভা। কবির কাব্য যার দ্বারা সৃষ্টি হয় তাই কারয়িত্রী প্রতিভা, "কবেরূপকুবাণা কারয়িত্রী।"<sup>24</sup> কবির কাব্য এইপ্রকার প্রতিভার উপরেই বিদ্যমান। কবিপ্রতিভার এই অংশটি আবার তিনভাগে বিভক্ত। তা হল— সহজা, আহার্য্যা ও ঔপদেশিকী। এই তিন ধরনের প্রতিভাই লক্ষিত হয়। সহজা প্রতিভা হল পূর্বজন্মের সংস্কার। এই জন্মের সংস্কার থেকে প্রাপ্ত হল আহার্য্যা এবং ইহজন্মের উপদেশ ও সংস্কার হল ঔপদেশিকী প্রতিভার কারণ। প্রতিভার তিনটি বিভাগের কারণে কবিদেরও তিনটি ভাগ রয়েছে। তাদের বৈশিষ্ট্য হল— সারস্বত কবি নিজেই স্বতন্ত্রভাবে কাব্যরচনা করতে সক্ষম, আভাসিক কবির রচনাশক্তি সীমিত এবং শেষ প্রকার হল ঔপদেশিকী কবি, যারা কখনো ভালো সুন্দরমানের আবার কখনো নিকৃষ্টমানের কাব্য রচনা করেন।

কারয়িত্রী প্রতিভার সাথে সাথে কবির উৎকর্ষতা বিধানের জন্য ভাবয়িত্রী প্রতিভার প্রয়োজন সর্বাগ্রে। ভাবয়িত্রী প্রতিভার মাধ্যমে কবিপ্রচেষ্টার সন্ধান পাওয়া যায়। এই প্রতিভা সমালোচকের হাতিয়ার স্বরূপ, যা প্রভূতভাবে কবির কাব্যরূপ বৃদ্ধিকে ফলবান করে তোলে। সমালোচকের ভাবনাই কবির রচনার গুণগতমান বৃদ্ধি করে। তাঁর বিচারশক্তিতে কাব্যের ভুলত্রুটি, সঠিক দিক নির্দেশনা, সাহিত্যমান বজায় থাকে। অতএব ভাবয়িত্রী প্রতিভা কারয়িত্রী প্রতিভাকে সর্বাঙ্গীণভাবে উন্নত করে তোলে।

**মন্মট ভট্টের মতে কাব্যকারণের ত্রৈবিধত্ব —**

অলংকার শাস্ত্রের অন্যতম প্রধান গ্রন্থ হল মন্মটাচার্য্য বিরচিত 'কাব্যপ্রকাশ'। আলোচ্য গ্রন্থের শুরুতে মন্মট কবিনির্মিত ও ব্রহ্মানির্মিতের পৃথকত্ব সূচিত করে, কাব্যের প্রয়োজনসমূহ উল্লেখ করে কাব্যের কারণানুসন্ধানে ত্রী হয়েছেন। মন্মট দণ্ডীর ন্যায় শক্তি (প্রতিভা) ও শাস্ত্রজ্ঞান (ব্যুৎপত্তি) এবং অভ্যাস অর্থাৎ কাব্যজ্ঞানের নিকট বিদ্যাচর্চা অভ্যাস ইত্যাদিকে একত্রে কাব্যের কারণ মেনেছেন। তাঁর মতে—

**"শক্তির্নিপুণতা লোকশাস্ত্রকাব্যোদ্বৈক্ষণাত্।**

**কাব্যজ্ঞানশিক্ষাভ্যাস ইতি হেতুস্তদুদ্ভবো।"**<sup>25</sup>

অর্থাৎ, কাব্যসৃষ্টিতে তার হেতু হল— শক্তি, লোক, শাস্ত্র ও কাব্যপ্রভৃতির পর্যালোচনা নিপুণতা এবং কাব্যজ্ঞতত্ত্ব অবগত ব্যক্তিদের থেকে লব্ধ শিক্ষার অভ্যাস। মন্মট শক্তিকেই কবিত্বের বীজ মনে করেছিলেন। তাঁর মতে শক্তি

ব্যতীত কাব্য রচিত হবে না, "যাং বিনা কাব্যং ন প্রসরেৎ প্রসূতং বা উপহসনীযং স্যাত্"<sup>26</sup> শক্তি ছাড়া কাব্যরচনা হলেও তা উপহাসসম্পদ হবে, এমনটা কোনো কবির কাম্য নয়। শক্তির সাথে কাব্য সৃষ্টির পশ্চাতে আর যে বিষয়গুলি থাকে তা হল স্বাবরজঙ্গমাত্মক লোকব্যবহার সম্পর্কে জ্ঞান এবং বিবিধ শাস্ত্রে নিপুণতা — ছন্দ, ব্যাকরণ, অভিধান, কলাশাস্ত্র, চতুর্ভুজ মৌক্ষশাস্ত্র, হস্তী, অশ্ব, খড়্গ প্রভৃতি বিষয়ে। আদিতে রচিত মহাকবিদের কাব্যপাঠের জ্ঞান এবং কাব্যতত্ত্বজ্ঞানের নিকট তাঁদের নির্দেশানুযায়ী কাব্যরচনা এবং পাঠে পুনঃ পুনঃ অভ্যাস এই তিনটি বিষয় একত্রে কাব্যের হেতু, "ত্রয়ঃ সমুদিতাঃ ন তু ব্যস্তাস্তস্য কাব্যস্যোদ্ভবে নির্মাণে সমুল্লাসে চ হেতুর্ন তু হেতবঃ।"<sup>27</sup> অতএব মন্যট শুধুমাত্র শক্তি বা প্রতিভাকে কাব্যসৃষ্টির কারণ হিসেবে মেনে নেননি। কারণ শক্তি হল পূর্বজন্মের সংস্কার, শক্তির অভাবজনিত রচনা দোষবিহীন ও ভালোমানের কাব্য হতে পারে না। আবার পাঠক হৃদয়ের দ্বারস্থ হতে হলে কবিকে বিবিধ শাস্ত্রীয় জ্ঞান ও পাণ্ডিত্যের অধিকারী হতে হবে। শাস্ত্রীয় নৈপুণ্যতাই তাঁদের কবি আখ্যায় ভূষিত করে। এছাড়াও আর একটি বিষয় হল কাব্যজ্ঞানের নিকট প্রাপ্ত জ্ঞান আবশ্যিক। কারণ একজন অভিজ্ঞ ব্যক্তিকেই পারেন সঠিক দিকটি নির্দেশ করতে। তাই কাব্য শ্রষ্টাকে নতুন তাকে অবশ্যই কাব্য জানেন এমন এবং কাব্যবিচারে সক্ষম ব্যক্তির নিকট বারংবার আলোচনা করতে হবে নিজ প্রবৃত্তিতে।

অতএব, মন্যট মতে শক্তি, নিপুণতা ও অভ্যাস একত্রে কাব্যের হেতু। এই তিনটি বিষয় দণ্ডচক্রন্যায়ের দ্বারা পরস্পর সাপেক্ষ।

#### পশুতরাজ জগন্নাথের মতে কাব্যাকারণ

সপ্তদশ শতকের পশুতরাজ জগন্নাথ শুধুমাত্র প্রতিভাকেই কাব্যাকারণ হিসেবে স্বীকার করেছেন। পূর্বাচার্যদের নয় বরং তিনি নিজের স্বকীয়তা রেখেছেন। কথ্যটি বলার পশ্চাতে যুক্তি হল তাঁর কাব্যাকারণ অনুসন্ধানের দৃষ্টি অন্যদের থেকে ভিন্ন। তিনি বলেন — "তস্য চ কারণং কবিগতা কেবলা প্রতিভা"<sup>28</sup> অর্থাৎ, তাঁর (কাব্যের) কারণ হল কবির প্রতিভা। প্রতিভা আসলে কী? বোঝাতে তিনি বলেছেন— "সা চ কাব্যঘটনানুকূলশব্দার্থোপস্থিতিঃ"<sup>29</sup> অর্থাৎ, এই প্রতিভা হল কাব্যরচনার অনুকূল শব্দ ও অর্থের উপস্থাপনা। একজন কবির প্রধান শক্তি হল যথোপযুক্ত শব্দার্থের চয়ন করা। যার জন্য প্রয়োজন প্রতিভা। জগন্নাথ কাব্যের নয় বরং স্বয়ং প্রতিভার দুটি কারণের কথা বলেছেন। তাঁর মতে—

"তস্যাপ্ন হেতুঃ ক্বচিৎহেতবামহাপুরুষপ্রসাদাবিজন্মদৃষ্টম্, ক্বচিৎচ বিলক্ষণ-অ্যুত্পত্তিকাব্যাকারণাভ্যাসী"<sup>30</sup> অর্থাৎ, প্রতিভার সেই দুইধরনের কারণ হল দেবতা মহাপুরুষ প্রভৃতিদের প্রসাদ এবং অপরটি হল ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস। এই তিনটিই প্রতিভার জন্ম দিতে পারে কিন্তু এরা একত্রে বা পৃথক পৃথক ভাবে কাব্যের কারণ নয়। তাই তিনি বলেন একজন বালক ব্যুৎপত্তি এবং অভ্যাস ছাড়াই কেবলমাত্র মহাপুরুষদের প্রসাদেই প্রাপ্ত অদৃষ্টের দ্বারা কাব্য রচনা করতে পারেন। এখানে পূর্বজন্মের ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস জনিত সংস্কার ধরে নেওয়া যায় না। তাহলে গৌরব দোষ হয়। অতএব একথা বলা ঠিক নয়। শুধুমাত্র অদৃষ্টকে প্রতিভার কারণ বলা যায় না। কারণ অনেক সময় দেখা যায় কোনো ব্যক্তির কিছু সময় পর্যন্ত তার মধ্যে প্রতিভা বা কাব্যরচনার গুণ লক্ষ্য করা না গেলেও সময়ের সাথে সাথে ব্যুৎপত্তি (শাস্ত্র জ্ঞানার্জন) ও অভ্যাসপূর্বক কাব্যরচনায় সক্ষম হন। সুতরাং অদৃষ্ট, ব্যুৎপত্তি বা অভ্যাস কোনোটাই এককভাবে কবিনিষ্ঠ প্রতিভার কারণ নয়। আবার একটি মাত্র কাব্যরূপ কার্যের এতগুলি কারণ হলে তাতেও বহুকারণতা দোষ হয়। কারণ থাকলে কার্য বর্তমান আবার বিপরীতটিও। কিন্তু একটি কার্যের দুটি কারণ কীভাবে? যেহেতু কোনো একটি কারণের দ্বারা কার্য উৎপন্ন হলে অপর কারণের প্রয়োজন কী? আবার প্রথম কারণেই কার্য সম্ভব

হলে দ্বিতীয় কারণ লাগে না। অতএব মানতে হবে দুটি কারণের দুটি কার্য। আবার ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস থাকার সত্ত্বেও কাব্য যেখানে সৃষ্টি হয় না, সেখানে প্রতিবন্ধকতা বিদ্যমান। এই প্রতিবন্ধকতা সৃষ্টিকারী নিজেও কোনোপ্রকার কাব্যরচনা করতে সমর্থ হন না। সুতরাং স্বীকার করতে দ্বিধা নেই প্রতিবন্ধকতা থাকলেও ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস থেকে প্রাপ্ত প্রতিভার দ্বারাও কাব্যসৃষ্টি সম্ভব। অতএব জগন্নাথ দ্বারা স্বীকৃত হল যে অদৃষ্ট এবং ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস দুটি হেতু থেকেই প্রতিভা স্ফুরিত হয় এবং তা থেকে কবির কাব্যরূপ রস নিঃসৃত হয়।

#### ফলাফল —

আলোচ্য সমীক্ষায় কাব্যরচনায় প্রতিভার অবদানসহ নানা আলংকারিকের নিজস্ব মতামত উপস্থাপন করার পর এই সিদ্ধান্তে উপনীত হওয়া গেল যে, কবিচিত্তে রসানুভূতিই কাব্যের জন্ম দেয়। প্রতিভার বৈশিষ্ট্য সম্পর্কে অভিনবগুণ্ড বলেন, "রসাবেশবৈশিষ্ট্যসৌন্দর্য্য কাব্যনির্মাণধর্মমতম্"<sup>31</sup> অর্থাৎ, রসের আবেশের দ্বারা নির্মল ও সুন্দর কাব্য নির্মাণ ক্ষমতা। অতএব বলা বাহুল্য যে প্রতিভা হোক ব্যুৎপত্তি বা অভ্যাস রসের মাধুর্য্য সর্বত্র। এই রসের আশ্রয়ে প্রতিভার মাধ্যমেই কবির কলমে কাব্য রচিত হয়। এই প্রসঙ্গে রাজশেখরের একটি বক্তব্য তুলে ধরা যাক, তিনি বলেছেন —

#### "একস্য তিষ্ঠতি কবের্গৃহি এব কাব্য-

#### মন্যস্য গচ্ছতি সুহৃদ্বনানি যাবত্।"<sup>32</sup>

কোনো কবির কাব্য স্বর্গহে বিরাজমান, অপর কোনো কবির কাব্য বন্ধুজন গৃহে পৌঁছায়, আবার কোনো কবির কাব্য বিশ্বব্যাপী ভ্রমণ করে। প্রতিভা নিজস্ব মহিমায় কবিগণের অন্তরে বিরাজমান। কিন্তু এই বিরাট কবিকূলে সবাই প্রসিদ্ধি অর্জন করতে পারেন না। তাই ধ্বনিকার বলেছেন— "যেনাস্মিন্মিত্তিবিচি-ব্রকবিপরম্পরাবাহিনি সংসারৈ কালিদাসপ্রমুতয়ো দ্বিভাঃ পশ্চাৎ বা মহাকবয়ঃ ইতি গণ্যন্তো।"<sup>33</sup> অর্থাৎ, প্রতিভার ফলে এই বিচিত্র কবিপরম্পরাবাহী পৃথিবীতে কালিদাস প্রভৃতি দুই, তিন বা পাঁচজন মহাকবি হিসেবে সুখ্যাতি অর্জন করেন।

আলঙ্কারিক ভট্টতৌতের মতে প্রতিভা কোনো সাধারণ জ্ঞান নয়, প্রজ্ঞা ও প্রতিভা, স্মৃতি, মতি ও বুদ্ধি তথা লৌকিক জ্ঞান থেকে ভিন্ন এক অলৌকিক জ্ঞান। প্রজ্ঞা ও প্রতিভা ত্রৈকালিক। প্রতিভা কখনোই স্থির নয় বরং স্পন্দনশীল। প্রতিভা অদৃষ্টজনিত কারণে আসলেও ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস দিয়ে শুধুমাত্র সেই প্রতিভার সন্ধান পাওয়া যায়।

বর্তমানে এই যন্ত্রনির্ভর সমাজে কবির কবিত্বপ্রতিভা হারিয়ে যাচ্ছে। প্রাচীন কবি ঋষিরা যখন নিজ প্রতিভা বলে মৌলিক চিন্তাভাবনা করত, সেখানে আজকের সমাজ যন্ত্রনির্ভর হয়ে পড়ছে। কোনো যান্ত্রিক শক্তি যে মানুষের মতো চিন্তা করতে পারে না তা আজ প্রমাণিত। মানুষের মধ্যে যে নিজস্ব অনুভূতি, মৌলিক সৃজনশীলতা রয়েছে, তা মেশিনে কোথায়? একজন কবিই পারেন কোনো সাধারণ ঘটনার আড়ালে পর্দা সরিয়ে বিশেষ কিছু উন্মোচন করতে।

একজন পাঠক তখনই কাব্য রসে বিলীন হয়ে যায়, যখন সে রসের ধারায় নিমজ্জিত হয়। বর্তমানে এই ব্যস্ত পরিসরে মানুষের উচিত সেই কাব্যরূপ সুধায় ডুব দিয়ে আনন্দ খুঁজে নেওয়া। শুধুমাত্র কাব্য পাঠই নয় বরং লেখালিখি করা একজন ব্যস্ত নাগরিককেও প্রশান্তির স্বাদ এনে দেবে। আচার্য্য দণ্ডী বলেছেন সহজাত প্রতিভা না থাকলেও নিরন্তর অভ্যাস ও শাস্ত্র জ্ঞান সরস্বতীর আশীর্বাদ এনে দিতে পারে। কবিরপ্রতিভা কেবল সুখ বর্ণনাতেই নয় বরং চরম বেদনাতেও রমণীয়তা সৃষ্টি করতে পারে।

#### উপসংহার —

কাব্য সৃষ্টিতে প্রতিভার দায়িত্বই হল সাধারণ অভিজ্ঞতাকে অসাধারণরূপে প্রকাশ করা। প্রতিভার দ্বারাই কবির ভাবনার গভীরতা অনুমান করা যায়। কবির রচনার মধ্যে তাঁর জ্ঞান, পাণ্ডিত্য, শাস্ত্রে পারদর্শিতা পরিলক্ষিত হয়, যা তাকে সকল

সাধারণ মানুষ থেকে আলাদা করে। আলঙ্কারিক দণ্ডীর মতে প্রতিভা সহজাত। জগন্নাথ আবার সেকথা মানেননি। মন্মটাচার্য্য যেমন কাব্যের ত্রিবিধ কারণ স্বীকার করেছেন, তেমনি রাজশেখর, জগন্নাথ প্রভৃতির প্রতিভাকেই শ্রেষ্ঠ মেনেছেন। অতএব, প্রতিভাই কবির সৃষ্টিশক্তি এবং ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস দিয়ে তাকে লাভ করা যায় মাত্র। এই প্রতিভাই কবিকে বিশ্বের ঘরে ঘরে পৌঁছে দেয়। রাজশেখর বলেন—

**"काव्येन किं कवेस्तस्य तन्मनोमात्रवृत्तिना।**

**नीयन्ते भावकैर्यस्य न निबद्धा दिशो दशा॥"**<sup>34</sup>

যাঁর রচনা দশদিকে প্রচারিত হয় না, যাঁর কাব্য কেবল সেই কবির মানসলোকেই সীমাবদ্ধ, সেই কবির এবং তাঁর কাব্যের কী প্রয়োজন? আবার এমন কথাও পাওয়া যায়—'वरम् अकविः, न पुनः कुकविः स्यात्।' অর্থাৎ কুকবির চেয়ে কবি না হওয়াই শ্রেয়।

কাব্য আমাদের নিত্যদিনের সঙ্গী। কাব্যপাঠ মানুষের প্রভূত উপকার সাধন করে। শুধুমাত্র কাব্যপাঠ বা শ্রবণ নয়, তা থেকে শিক্ষণীয় বিষয়কে চয়ন করে সেই আদর্শে নিজেদের গড়ে তুলতে হবে। মানুষ তখনই কাব্যকে গ্রহণ করবে, যখন সেই কাব্যের বিষয় মানুষের নিত্য-পরিচিত হবে। বর্তমানে যন্ত্রই আমাদের কর্মকর্তা, যন্ত্রই আমাদের দিকনির্দেশক। যন্ত্র সমস্ত প্রশ্নের উত্তর দিয়ে দেয় ঠিকই কিন্তু সে কাব্যের আত্মা বা তার রস উপলব্ধি করতে পারে না। করুণ রসের অনুভূতিতে মহাকবি বাণীকি রামায়ন রচনা করেছিলেন, আজকের মানবসমাজ তার থেকে যোজন দূরে। কোনো কিছু সৃষ্টি করতে যে পরিশ্রম ও অধ্যবসায় প্রয়োজন, তার সহজ সমাধান হয়ে যাচ্ছে কয়েক সেকেন্ডেই। ফলে মানবজাতি নিজ প্রতিভা ও জ্ঞানের প্রয়োগ করতেই ভুলে যাচ্ছে। অন্তরে যদি রসোপলব্ধি না হয় তাহলে বিশ্বজয়ী কাব্যসৃষ্টি হয় না। অতএব, বলা যায় যে ব্যুৎপত্তি ও অভ্যাস সঙ্গী হলেও প্রতিভাই কাব্যরূপ সাগর পারাপারের একমাত্র অবলম্বন।

#### Reference -

1. চট্টোপাধ্যায়, চিন্ময়ী, "কাব্যদর্শ", পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পুস্তক পর্ষৎ, এ কিউ ১৩/১, সেক্টর-৫, সল্টলেক সিটি, কলকাতা-৭০০০৯১, দ্বিতীয় মুদ্রণ- সেপ্টেম্বর, ২০১৮/বি।
2. মুখোপাধ্যায়, ড: বিমলাকান্ত, পাল, ড: বিপদভঞ্জন, (সম্পাদক), "কাব্যপ্রকাশ", প্রকাশক- দেবশিস ভট্টাচার্য্য, সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডার, ৩৮, বিধান সরণী, কলকাতা- ৭০০০০৬, প্রথম প্রকাশ- ১৪১৭।
3. বসু, ড: অনিল চন্দ্র, "কাব্যালঙ্কারসূত্রবৃত্তি", সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডার, ৩৮, বিধান সরণী, কলকাতা-৭০০০০৬, সংস্করণ- ১৯৭৭।
4. শাস্ত্রী, সীতানাথ আচার্য্য, দাস, দেবকুমার, "কাব্যমীমাংসা", স্বদেশ, ১০১ সি, বিবেকানন্দ রোড, কলকাতা-৭০০০০৬, প্রথম প্রকাশ- ২০০৮।
5. ঘোষ, বিদ্যুৎ বরণ, "রসগঙ্গাধর", পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পুস্তক পর্ষৎ, এ কিউ ১৩/১, সেক্টর-৫, সল্টলেক সিটি, কলকাতা-৭০০০৯১, প্রথম প্রকাশ- ২০১৭।
6. মুখোপাধ্যায়, ড: বিমলাকান্ত, বন্দ্যোপাধ্যায়, শ্রী অশোককুমার (সম্পাদক), "ধ্বন্যালোক", প্রকাশক - দেবশিস ভট্টাচার্য্য, সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডার, ৩৮, বিধান সরণী, কলকাতা-৭০০০০৬, পরিমার্জিত সংস্করণ- ২০১১।
7. চক্রবর্তী, সত্যনারায়ণ, "ধ্বন্যালোক", সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডার, ৩৮, বিধান সরণী, কলকাতা-৭০০০০৬, প্রথম প্রকাশ- ১৯৮৮।
8. মুখোপাধ্যায়, দুর্গাশঙ্কর, "কাব্যতত্ত্ব-বিচার", প্রথম খণ্ড - 'ভারতীয় অলঙ্কারশাস্ত্র', মর্ডান বুক এজেন্সী- প্রাইভেট লিমিটেড, ১০, বঙ্কিম চ্যাটার্জী স্ট্রীট, কলকাতা - ৭০০০৭৩, সংস্করণ - ১৯৮৮।

9. বন্দ্যোপাধ্যায়, ধীরেন্দ্রনাথ, "সংস্কৃত অলঙ্কারশাস্ত্র: তত্ত্ব ও সমীক্ষা", পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পুস্তক পর্ষৎ, ৬ এ, রাজা সুবোধ মল্লিক স্কোয়ার, কলকাতা - ৭০০০১৩, প্রথম প্রকাশ - ডিসেম্বর, ২০১২/সি।
10. চট্টোপাধ্যায়, জয়শ্রী, "অলঙ্কার সাহিত্যের সমৃদ্ধ ইতিহাস", সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডার, ৩৮, বিধান সরণী, কলকাতা - ৭০০০০৬, তৃতীয় সংস্করণ - শ্রী পঞ্চমী ১৪২০।

#### পারদর্শন:-

1. কাব্যপ্রকাশ, ১/২
2. কাব্যপ্রকাশ, ১/১
3. কাব্যকৌতুক
4. লোচন, ৩/৬
5. ন্যালোক, লোচন
6. কাব্যালঙ্কার, ১/১৬
7. ধ্বন্যালোক, ১/৬
8. ধ্বন্যালোক, ১/৫
9. ধ্বন্যালোক, ১/৫
10. কাব্যালঙ্কার ১/৫
11. কাব্যদর্শ, ১/১০
12. কাব্যদর্শ, ১/১০৩
13. কাব্যদর্শ, ১/১০৪
14. কাব্যদর্শ, ১/১০৫
15. কাব্যালঙ্কার সূত্রবৃত্তি ১/১২
16. (কাব্যালঙ্কার সূত্র ১/৩/১৬)
17. কা. সূ. বৃ. ১/৩/১৬
18. কা. সূ. বৃ. ১/৩/১
19. ব্যমীমাংসা, প্রথমাধিকরণ, দ্বিতীয় অধ্যায়
20. কা. মী., ১ম অধিকরণ, ৪র্থ অধ্যায়
21. কা. মী., ১/৪
22. কা. মী., ১/৪
23. কা. মী., ১/৪
24. কা. মী. ১/৪
25. কাব্যপ্রকাশ, ১/৩
26. কাব্যপ্রকাশ, বৃত্তি, ১/৩
27. কাব্যপ্রকাশ, ১/৩, বৃত্তি
28. রসগঙ্গাধর, প্রথমানন
29. রসগঙ্গাধর, প্রথমানন
30. রসগঙ্গাধর, প্রথমানন
31. লোচন টীকা
32. কা. মী., ১ম অধি., ৪র্থ অধ্যায়
33. ন্যালোক, বৃত্তি ১/৬
34. কা. মী., ২/৪